

सूरह दुख़ान - 44



सूरह दुख़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 59 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 में आकाश से दुख़ान (धुवें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुख़ान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन का महत्व बताया गया है। फिर आयत 7-8 में कुर्आन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत 9 से 33 तक फिरऔन की जाति के विनाश और बनी इस्राईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत 34 से 57 तक दूसरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग-अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुर्आन का आदर नहीं करते। अर्थात् इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अल्लाह से दुआ की, कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज़ का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर बाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूवाँ जैसा दिखाई देता था। (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4823, 4824)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. शपथ है इस खुली पुस्तक की!
3. हम ने ही उतारा है इस^[1] को एक
शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान
करने वाले हैं।
4. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है
प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।
5. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम
ही भेजने वाले हैं रसूलों को।
6. आप के पालनहार की दया से,
वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने
वाला है।
7. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार
है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है,
यदि तुम विश्वास करने वाले हो।
8. नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही जो
जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा
पालनहार तथा तुम्हारे गुजरे हुये
पूर्वजों का पालनहार।
9. बल्कि वह (मुश्रिक) संदेह में खेल
रहे हैं।

حَمْدٌ

وَالْكِتَابِ الْمُنِينِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبَرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا
مُنذِرِينَ

فِيهَا يُفَرَّقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ

أَمْرًا مِنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنُتُمْ
مُؤْمِنِينَ

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ
الْأَوَّلِينَ

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ

1 शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल कद्र) है यह रमजान के महीने के अन्तिम दशक की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात की विशेषता तथा प्रधानता के लिये सूरह कद्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कुर्आन उतरने का आरंभ हुआ। फिर 23 वर्षों तक आवश्यकतानुसार विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखिये: सूरह बकरा, आयत नं॰: 185)

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ^[1] लायेगा।
11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।
12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।
13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।
14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।
15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।
16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़^[2] में ले लेंगे। तो हम

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ دُخَانٍ مُّبِينٍ ۝

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝

أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

فَعَرَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّوْا مُجَنُّونَ ۝

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ وَلَئِنَّا لَأَنكُمُ عَذَابٌ ۝

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۝

- 1 इस प्रत्यक्ष धुँवे तथा दुःखदायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अल्लाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुवाँ जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अल्लाह से प्रार्थना कर दें। वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेंगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिति पर आ गये। फिर अल्लाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुखारी: 4821, तथा सहीह मुस्लिम: 2798)
- 2 यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही संख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ कयामत के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

निश्चय बदला लेने वाले हैं।

17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व
फिरऔन की जाति की। तथा उन के
पास एक आदरणीय रसूल आया।

وَلَقَدْ فَتَنَّا أَقْبَلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ
رَسُولٌ كَرِيمٌ ۝

18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों
को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक
अमानतदार रसूल हूँ।

أَنْ أَذِلَّ إِلَى عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न
करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण
प्रस्तुत करता हूँ।

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي إِنِّي كُنتُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ۝

20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार
की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से
कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ۝

21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो
तो मुझ से परे हो जाओ।

وَأَنْ لَّمْ تُوْثِقُوا لِي فَأَعْتَزِلُنِي ۝

22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने
पालनहार को, कि वास्तव में यह
लोग अपराधी हैं।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝

23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल
जा रातो-रात मेरे भक्तों को लेकर।
निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।

فَأَسْرِ بِعَبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُونَ ۝

24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा
पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने
वाली सेना है।

وَأَنزِلْ الْبَحْرَ هَوًّا إِنَّهُمْ مُّجْنَدٌ مُّغْرَقُونَ ۝

25. वह छोड़ गये बहुत से बाग़ तथा
जल स्रोत।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

26. तथा खेतियाँ और सुखदायी स्थान।

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝

27. तथा सुख के साधन जिन में वह

وَنَعْمَةٍ كَالَّذِينَ هُمْ يَكْفِيهِمْ ۝

आनन्द ले रहे थे।

28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे^[1] लोगों को।
29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।
30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।
31. फिरऔन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लंघनकारियों में से था।
32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।
33. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।
34. वास्तव में यह^[2] कहते हैं कि
35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।
37. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति^[3], तथा जो उन से पूर्व रहे हैं?

كَذَلِكَ وَأَوْثَقْنَاهُمُ الْخُرَيْنَ ۝

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝

وَلَقَدْ بَعَثْنَا لَبِيَّ إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ۝

وَآتَيْنَاهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝

إِنْ هَؤُلَاءَ لَيَقُولُونَ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا عَنَّا بِمُنْشَرِينَ ۝

فَأْتُوا بِآيَاتِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

1 अर्थात बनी इस्राईल (याकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

2 अर्थात मक्का के मुश्रिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है। इस के पश्चात् परलोक का जीवन नहीं है।

3 तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिम्यर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखिये: सूरह सबा की

हम ने उन का विनाश कर दिया।
निश्चय वह अपराधी थे।

38. तथा हम ने आकाशों और धरती को
एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है
खेल नहीं बनाया है।
39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों
को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते हैं।
40. निःसंदेह निर्णय^[1] का दिन उन सब
का निश्चित समय है।
41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के
कुछ काम नहीं आयेगा और न उन
की सहायता की जायेगी।
42. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया
हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा
प्रभावशाली दयावान है।
43. निःसंदेह ज़क़ूम (थोहड़) का वृक्ष।
44. पापियों का भोजन है।
45. पिघले हुये ताँबे जैसा, जो खौलेगा
पेटों में।
46. गर्म पानी के खौलने के समान।
47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा
धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।
48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٨﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْبَعِثِينَ ﴿٣٩﴾

مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤١﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَوْلًى شَيْئًا وَلَا
هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٢﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٣﴾

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقْوِمِ ﴿٤٤﴾

طَعَامُ الْآثِمِينَ ﴿٤٥﴾

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٦﴾

كَغَلِي الْحَمِيمِ ﴿٤٧﴾

خَذُوهُ فَاغْلُظُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٨﴾

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٩﴾

आयत- 15, से 19, तक।)

- 1 अर्थात् आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है।
और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

अत्यंत गर्म जल की यातना^[1]

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।

50. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।

51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।

52. बागों तथा जल स्रोतों में।

53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।

54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से^[2]

55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।

56. वह उस स्वर्ग में मौत^[3] नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।

57. आप के पालनहार की दया से, वही

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝

إِنَّ التَّقِيْنَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَّهُمْ عَنْهَا الْعَذَابَ الْجَحِيمَ ۝

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

1 हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा। (तिर्मिजी: 2582, इस हदीस की सनद हसन है।)

2 हूर: अर्थात् गोरी और बड़े बड़े नैनों वाली स्त्रियों।

3 हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर बध कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुखारी: 6548, सहीह मुस्लिम: 2850)

बड़ी सफलता है।

58. तो हम ने सरल कर दिया इस
(क़ुर्आन) को आप की भाषा में ताकि
वह शिक्षा ग्रहण करें।
59. अतः आप प्रतीक्षा करें^[1] वह भी
प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَأَنَّمَا يُعِثِّرُنَهُ لِبِأْسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् परिणाम की।